आज की मुरली का सार --- Date: 03-06-2014

बाबा ने आज तीन प्रकार की सेवाओं और उसमें सफलता कैसे प्राप्त हो इसके के बारे में बताया हैं.

1. मूल सेवा -- एक बाप की याद में रहना और दूसरों को बाप की याद दिलाना. किसी को भी बाप का परिचय देना और उस आत्मा कल्याण करने के निमित बनना. हम जहॉ रहते हैं, जहॉ काम करते हैं, जहॉ आते-जाते रहते हैं, जिसको भी मिलते हैं सबको सत्य बाप का सत्य परिचय देना हैं. बाबा का परिचय हम दो-तीन लाइन में कुछ इस तरह से दे सकते हैं -- पहले पूछना चाहिए की, शास्त्रों में, धर्मग्रंथों में सब में लिखा हैं की हम आत्माये हैं, आप मानते हो की हम आत्माये हैं. अगर हाँ करें तो दूसरा प्रश्न पूछना चाहिए की, हम आत्माये हैं तो हमारा पिता कोन हैं?, भारत में इतने सारे दैवी-देवताओं के मंदिर हैं उसमें से परमपिता-परमात्मा किसको कहा जाता हैं? जब सामने वाले को कोई जवाब न मिले तो बताना चाहिए की परमपिता-परमात्मा शिव को कहा जाता हैं (इसलिए भक्ति में भी शिव को शिवबाबा कहते हैं). हम जीव-आत्माओं का वह पिता, परमपिता-परमात्मा शिव हैं और अभी उनका कार्य चल रहा हैं. ज्यादा जानकारी के उत्सुक लगे तो राजयोग के बारे में बता कर नजदीकी सेन्टर का रास्ता बताना चाहिए.

बाबा ने कहा, बाबा की याद में रह कर ये सेवा करेंगे तो हमें सफलता अवश्य मिलेगी.

2. सूक्ष्म सेवा -- सूक्ष्म सेवा यानी मनसा सेवा. इस के लिए हमारी मनसा श्रेष्ठ होनी जरूरी हैं. हमारी मनसा श्रेष्ठ तब बनेगी जब मेरा स्वभाव बहुत शान्तिप्रिय, मीठा, निर्माणचित, सबसे मिलनसार और गुणग्राही होगा.

3. स्थूल सेवा -- सेन्टर में या अपने लौकिक घर में बाबा की याद में रह कर खाना बनाना, अन्य कोई भी छोटी-बड़ी सेवा करना. स्थूल सेवा में सफलता का आधार स्वयं को निमित और निर्माण चित समझ कर एक बाप की याद में रह कर सेवा करना हैं.

ॐ शांति.